VISHVA–JYOTI R. N. NO. 1/57 ISSN 0505-7523
REGD. NO. PB-HSP-01
CURRENCY PERIOD: (1.1.2015 TO 31.12.2017)

६४, १२ मार्च –2016

विश्वज्योति

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर

Scanned with CamScanner

अभिज्ञानशाकुन्तल में ऋषित्रिपुटी

– डा. डायालाल मालदेभाई मोकरिया

भारतीय संस्कृति ऋषिमुनियों की संस्कृति है। भारतवर्ष के आर्षद्रष्टा ऋषिमुनियों ने मनुष्य-जीवन का महत्व समझा है। इसलिए ही मनुष्य-जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए उनको आवश्यकता अनुसार अवसर मिला, उत्तमोत्तम मार्गदर्शन दिया है। भारतीय-साहित्य का अन्वेषण हमें इस बात की हम को स्वाभाविक ही समझ मिलती है।

रामायण, महाभारत, पुराण इत्यादि ग्रंथों में भी वाल्मीकि, व्यास इत्यदि ऋषिमुनियों ने हमारी उत्तम संस्कृति का गीत गाया है और विविध कथाओं और चरित्रों का आलेखन करके हमारे लिए प्रेरणादायी संदेश दिया है। इसलिए वाल्मीकि मुनि के लिए कहा गया है- राम राम-ऐसे कुंजन करती हुई कविताशाखा पर बैठी हुई वाल्मीकि जी की कोयल जैसी वाणी वन्दनीय है।[१] कोयल का कर्णप्रिय कण्ठ सब को आनन्द ही देता है वैसे ही महाकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना मधुरता से की है और सबको आदर्श मानवजीवन जीने का संदेश दिया है। महाभारत अष्टादशपुराण आदि के रचयिता व्यासमुनि को भी महाकवि बाणभट्ट ने सम्यक् श्रद्धांजली दी है-

नमः सर्वविदे, तस्मै व्यासाय।
चक्रे पुण्यं सरस्वत्या यो वर्षमिव भारतम्।।[२]

सब जानने वाले और कविस्रष्टा व्यासजी को नमस्कार है क्योंकि उन्होंने सरस्वती नदी की तरह महाभारत रूपी अपनी वाणी से भारतवर्ष को पवित्र किया है। रामायण, महाभारत और पुराणों को आधार बनाकर कालिदास, भरत, श्रीहर्ष, भारवि इत्यादि अनेक कविओं ने विविध ग्रन्थों की रचना कर भारतीय अस्मिता प्रकट है।

संस्कृत साहित्य के अतिप्रसिद्ध कवि कालिदास ने अपने विश्वविख्यात नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल में कण्व, दुर्वासा और मारिच ऋषिओं का निरूपण करके ऋषिसंस्कृति को उजागर करने का बहुत अच्छा प्रयत्न किया है।

ऋषि बनने के लिए परिवार छोड़ना आवश्यक नहीं है। मनुष्य संसार में रहकर भी ऋषि बन सकते हैं। तपःपूत ऋषि पारिवारिक जीवन को प्रभावित करता है, इसलिए हम अभिज्ञानशाकुन्तल में देख सकते हैं कि विश्वामित्र तप कर रहे थे किन्तु मेनका का संसर्ग हो जाता है और शकुन्तला का प्रादुर्भाव

(१) श्रीरामरक्षास्तोत्रम्, ३४

(२) हर्षचरितम्, १-३

Scanned with CamScanner

होता है । इस शकुन्तला का कण्व ऋषि पालन-पोषण करके पितृकार्य करते हैं । इतना ही नहीं इस पुत्री के प्रतिकूल भाग्य का शमन करने सोमतीर्थ जाते हैं । कण्वऋषि में कवि कालिदास ने उत्तम पिता का दर्शन कराया है । तपोवन की विविध क्रियाएँ और प्रवृत्तियाँ इस अद्भुत व्यक्तित्व में एकाकार हो जाती हैं । शकुन्तला का प्रेम, शार्ङ्गरव आदि शिष्यों का विद्याभ्यास, तप आदि यह ऋषिमुनि के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हैं । प्रथम तीन अंकों में उनका प्रत्यक्ष प्रवेश नहीं है तो भी उनकी परोक्ष उपस्थिति वातावरण को प्रभावित करती है । चतुर्थ अंक में कण्व ऋषि की प्रत्यक्ष उपस्थिति होती है । शकुन्तला का विदाई-प्रसंग निस्पृही इस ऋषि का भी कंठावरोध करता है । वह रो पड़ते हैं।[३] कन्याविदाई प्रसंग में पिता जो वेदना का अनुभव करता है वह यहाँ बताकर साबित कर दिया है कि स्वाभाविक पारिवारिक प्रेम सबको प्रभावित करता है ।

दुर्वासा ऋषि के चरित्रनिरूपण से भी कवि ने पितृधर्म का निर्देश दे दिया है। कहा है कि दुर्वासा का शाप तो मात्र कवि का रूपक है। दुष्यंत और शकुन्तला का बंधनहीन गुप्त मिलन सनातन शाप से युक्त है । उन्मत्तता का उज्ज्वल उन्मेष क्षणिक ही होता है । उसके बाद अवसादन का,अपमान का और विस्मृति का अंधकार घेर लेता है । यह सनातन नियम है।[४] जब शकुन्तला अतिथिधर्म भूल जाती है तब दुर्वासा उनको पितृवत् दण्ड देकर अपने कर्तव्यपालन में प्रमाद न करने का सन्देश देते हैं और इस शाप की वजह से ही शकुन्तला अन्त:पुर की एक सामान्य स्त्री से बढ़कर एक गौरवयुक्ता स्त्री बन गई थी। इस प्रसंग के बारे में कवि और विवेचक उमाशंकर जोशी कहते हैं कि आत्मशोधन के मार्ग पर पैर रखने वाला शाप निष्ठुर वेश में छिपा हुआ आशीर्वाद ही है। ऋषिमुनि के शाप अथवा कठोरता के पीछे भी हमारा हित ही छिपा हुआ होता है ।

शाकुन्तल के अन्तभाग में देवताओं के मातापिता अदिति और मारिचऋषि आते हैं । इस दम्पति के सान्निध्य में शकुन्तला और दुष्यंत का टूटा हुआ दाम्पत्य जीवन जुड़ जाता है । अनायास से ही उनमें आदर्श, सहिष्णुता और गृहिणी के गुण प्रतिबिम्बित होते हैं । यह दम्पति जब दाम्पत्य-धर्म की बात करते हैं तब ही शकुन्तला और उनका दाम्पत्यप्रेम विशुद्ध करते हैं ।

अभिज्ञानशाकुन्तल में कवि नायिका शकुन्तला के जीवन को बदलते हुए रेखांकन में ऋषियों को भी बदलते चलते हैं । तो भी तीनों ऋषियों की एकरूपता में बाधा नहीं आती। ये तीनों ऋषि-मुनि हमारे जीवन-व्यवहार का उत्तम मार्गदर्शन करते हैं ।

पूर्व साहित्य संकाय अध्यक्ष, अनुस्नातक भवन,
श्री सोमनाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, वेरावल(गुजरात)

(३) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ४-६ (४)प्राचीन साहित्य, पृ.-२२ (५)शाकुन्तल, पृ- ३८

Scanned with CamScanner